ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.03, May : 2023

गिरमिटिया देशों में हिंदी

डॉ.एस.प्रीति एसोसिएट प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग विज्ञान एवं मानविकी संकाय एस. आर. एम. इंस्टिट्यूट ऑफ साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी कट्टनकुलाथुर–603203

इंसान भावनाओं के हाड़–मास से बना हुआ एक बौद्धिक पुतला है। चूंकि उसका निर्माण भावनाओं से हुआ है तो फिर जगजाहिर है कि भावनाएं उसके जीवन के मूल में होंगी। यही भावनाएं इंसान को ईश्वर की कल्पना करने के लिए प्रेरित करती हैं। यही भावनाएं इंसान को इतनी शक्ति और क्षमता देती हैं कि इंसान ईश्वर का विकल्प अपने इर्द–गिर्द खोज लेता है कभी अपने माता–पिता के रूम में तो कभी अपनी मातृभूमि के रूप में।

संयोग देखिए!
नियति ने इंसान को उस भावनाओं के साथ उचित व्यवहार करने अथवा उसके आवेग को सार्थक मार्ग प्रदान करने के लिए भाषा की नींव रखी है।

भाषा के बिना किसी जीवन की कल्पना निरर्थक है। मैं ऐसा इसलिए कह रही हूँ कि बात अगर सिर्फ इंसान की हो तो हम उसके किसी पहलू को इंसान तक सीमित रखने की चेष्टा कर सकते हैं। लेकिन बात जब भावना से भाषा तक पहुंचती है तो हम भाषा को सिर्फ इंसानों तक सीमित नहीं रख सकतें। प्रमाण के तौर पर आप अपने आस–पड़ोस में किन्हीं जानवरों को देखिए। छत पर उतरते परिंदों को देखिए। उनकी भी अपनी भावनाएं होती हैं उनकी भी अपनी एक भाषा होती है। 1*

अर्थात अगर हम ये कहें कि ईश्वर, माँ और मातृभूमि जैसी विराट भावनाओं को समेटने के लिए भाषा की नितांत आवश्यकता होती है तो ये अतिश्योक्ति नहीं होगी।

दुनिया में लाखों संस्कृतियाँ हैं। हजारों देश हैं और उन सबकी करोड़ों भाषाएं हैं और इस अनन्त कड़ी में एक छोटा सा मोती हमारे हिस्से में भी है जिसे हम सप्रेम हिंदुस्तान कहते हैं और उसकी हृदय में गंगा की पवित्रता की तरह बहती हुई एक प्यारी सी धारा है जिसे हम मुक्त कंठ से हिंदी कहते हैं।

हिंदी हमारे लिए महज भावनाओं को व्यक्त करने का एक सरतलम जरिया नहीं है बल्कि ये हमारे लिए स्वयं एक भावना है। उदाहरण के तौर पर आप कल्पना करिये कि आप देश,काल और परिस्थिति से प्रभावित होकर किसी देश में प्रवासी बनकर गये हुए हैं। एक अन्य संस्कृति आपकी आंखों के सामने खिलखिला रही है परंतु आप उस संस्कृति से अनजान खुद को वहाँ अकेले महसूस कर रहे हैं तभी अचानक आपके कानों में हिंदी का स्वर सुनाई दे दे। यकीन करिये आपका मन जो लक्ष्मण की मूर्छा की तरह सूर्योदय नहीं चाहता था वो भी हिंदी रूपी संजीवनी का स्पर्श पाते ही बाँहें खोलकर सूर्योदय की तरफ दौड़ पडेगा।

अगर फिर भी मेरी बातें आपके मन में क्षण भर के लिए भी किसी संदेह को जन्म दे रही हैं तो आप मेरे साथ एक मानसिक यात्रा पर चलिये और याद करिए जब हमारा देश गुलामी के जंजीरों में जकड़ा हुआ था। अंग्रेज का मन हमें लूटने से नहीं भरा तो वो हमें गुलाम बनाने पर आमादा हो गए। उससे भी उनकी राक्षसी इच्छाएं तृप्त नहीं हुईं तो उन्होंने एक नया शब्द ईजाद किया 'गिरिमिटिया!' कहते हैं कि

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.03, May : 2023

गिरिमिटिया शब्द 'एग्रीमेंट' शब्द से निकला हुआ है। 2* लेकिन जब आप थोड़ा शोध करेंगे तो ये चीजें साफ हो जाएंगी कि एग्रीमेंट जैसी बैसाखी के सहारे गिरिमिटिया शब्द भारत के गले में पड़ा हुआ गुलामी का अपडेटेड फंदा था।

और फिर अंग्रेजों ने इस गिरिमिटिया शब्द के आतंक को जीवित रखने के लिए हम भारतीयों का दोहन करना शुरू कर दिया। देखते-देखते भारत से बड़ी संख्याओं में लोग हर साल १० से १५ हज़ार मज़दूर गिरमिटिया बनाकर फिजी, ब्रिटिश गुयाना, डच गुयाना, ट्रिनीडाड, टोबेगा, नेटाल (दक्षिण अफ्रीका) में गुलाम के तौर पर भेजे जाने लगे।

गुलामों की संख्या ऐसे बढ़ी कि कुछ दिन में एकाध देश गिरिमिटिया देश कहलाने लगे। कल्पना करिये! उस वक्त उन गुलामों के लिए उस देश में सुखद अनुभूति के नाम पर क्या होगा?

मुझे नहीं लगता कि उस वक्त उनकी झोली में मुस्कुराहट के रूप में हिंदी के सिवाय कुछ और होगा,क्योंकि फिर से बात भावनाओं की आएगी और बात जब भावनाओं की आएगी तो भाषा का जिक्र होना लाज़िमी है।
लेकिन उस वक्त बात सिर्फ भावनाओं की नहीं थी यातनाओं की थी। अब सोचिये हिंदी उन गिरिमिटिया मजदूरों के लिए क्या काम करती होगी।

अपने अंतर्मन से पूछिए,आपको जवाब मिलेगा कि हिंदी उस वक्त उन गिरमिटियों के लिए उनके घावों पर एक शीतल लेप का काम करती होगी।

स्थिति बदली, मानवता का कद बड़ा हुआ तो यातनाएं थोड़ी ठिगनी हुईं। परिणामस्वरूप गिरमिटियों का दुःख थोड़ा कम हुआ। लेकिन उनके पास इतने पास इतने पैसे नहीं थे कि वो स्वदेश लौट सकें और जब उनके पास पैसा हुआ तो वो देश,काल और परिस्थिति के हाथों इतने विवश हुए कि वो चाहकर भी स्वदेश नहीं लौट सके।

उन देशों में लोग मजदूर से ओहदेदार बनने लगे। धीरे-धीरे उनसे हिंदी छिटकने भी लगी। लेकिन कहते हैं जो आपके रगों की धमनियों में बस जाता है उसे निकाल पाना असंभव होता है। फिर गिरमिटियों ने प्रदेश की संस्कृति और स्वदेश की हिंदी में सामंजस्य बनाना शुरू किया। परिणामस्वरूप आज उन देशों में हिंदी अपने वजूद का सार्थक उदघोष कर रही है।
देश के बाहर या यूँ कहे भारतेत्तर देशों में हिदी का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप को को विस्तार प्रदान करने में प्रवासी साहित्यकारों ने सेतु का काम किया है। सभी प्रवासी भारतीय विदेश में अपनी भाषा की रक्षा, संरक्षा, एवं भाषा के प्रति सचेष्ट है, यही कारण है कि सर्वत्र विदेश में जहाँ- जहाँ भारतीय, प्रवासी या अप्रवासी के रूप में गए हैं वे हिंदी बोलने का प्रयत्न करते है और अपनी भाषा एवं संस्कृति पर उन्हें गर्व है | वे अपनी अगली पीढ़ी को हिंदी सिखाना चाहते हैं | क्योंकि वही हिंदी उन्हें विदेश में जोड़ने वाली ताकत है |"3* वे गरीब भारतवंशी शोषित, पीड़ित, प्रताड़ित, एवं अपमानित होते हुए भी अपनी संस्कृति एवं मानवीय मूल्यों को बचाए रखने में सफल रहे साथ ही अपनी भाषागत एकता की मूल्यों को भी बनाए रखने में सार्थक सिद्ध हुए है |

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.03, May : 2023

समस्या :

गिरमिटिया मजदूरों के इतिहास के माध्यम से यह स्पष्ट रूप से जाना जा सकता है कि वहाँ निवास कर रहे भारतवंशी को विभिन्न प्रकार के मौलिक अधिकारों से वंचित रखा गया | यहाँ तक कि भोजपुरिया समाज खुल कर अपनी भाषा में वार्तालाप भी नहीं कर सकते थे | इस संदर्भ में मॉरिशस के सर्वश्रेष्ठ एवं लोकप्रिय रचनाकार अभिमन्यु अनत ने अपनी सर्वश्रेष्ठ प्रसिद्ध रचना 'लाल पसीना' में लिखा है– "जिस दिन गोरे सरदारों की ड्यूटी की बदली की जाती उस दिन सारे भारतीय मजदूर खुलकर बातें कर पाते। 4*

वस्तुतः वर्तमान समय में स्थिति यह है कि मॉरिशस क्रियोली और भोजपुरी को छोड़कर वहाँ सभी भाषाएँ पढ़ने लिखने के लिए ही सीखी जाती है | जबकि फिजी में गिरमिटिया हिंदी के नव विकसित भाषा के रूप में फिजी बात, सूरीनाम में सरनामी, दक्षिण अफ्रीका में नेताली हिंदी कहलाए | इनकी संरचना का मूल मुख्य रूप से अवधि, भोजपुरी और खड़ीबोली था जिसमें नए देश की भाषा सत्ता भाषा के शब्द वहाँ की जनभाषा में घुल–मिल गए | श्री जितेन्द्र कुमार मित्तल ने अपनी पुस्तक 'मॉरिशस देश और निवासी' में लिखा है "भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व मॉरिशस में स्थिति यह थी कि भारतीय मूल के सभी मॉरिशसवासियों की साहित्य की भाषा खड़ीबोली हिंदी थी, किन्तु भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वहाँ से आने वालों में प्रांतीयता की भावना और भाषा का उन्माद स्वरूप उत्पन्न हुआ है | 5* फलस्वरूप अब हिंदी के बल हिंदी भाषी राज्यों से आये हुए लोगों तक सिमटती जा रही है |

अपनी भाषा हिंदी के प्रति निष्ठा को बचाए हुए है | हिंदी के प्रति उत्कृष्ट लालसा को दर्शाते हुए माँरिशस के कवि मुनीश्वर लाल चिंतामणि के शब्दों में–

"उस आदमी से जाकर कहो कि
मेरी हिंदी भाषा
एक ऐसी खूबसूरत चीज है
जिसनें मेरी संस्कृति को
अब भी बचाए रखा है..| 6*

भारत मे हुए 10 वें हिंदी सम्मलेन में "गिरमिटिया देशों में हिंदी" विषय पर विचार विमर्श मे कहा गया था कि सभी गिरमिटिया देशों में हिंदी की स्थिति सामान्य है। गिरमिटिया देशों ने धर्म और संप्रदाय से उठकर हिंदुस्तानी समाज का विकास किया है।

समाधान :

इन गिरमिटिया देशों में हिंदी की समस्याओं में हिंदी के प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी है। भारत इस कमी को दूर करने में सहयोग कर सकता है। हिंदी के अंतरराष्ट्रीय भाषा का मानक विकसित करने पर भी जोर दिया जा सकता है। गिरमिटिया देशों में हिंदी की बोलियों के संरक्षण की आवश्यकता है। भारत सरकार द्वारा गिरमिटिया देशों में हिंदी के अध्ययन के लिए दी जाने वाली छात्रवृत्ति का कोटा बढ़ाए जाने, बच्चों को केवल हिंदी साहित्य नहीं बल्कि बिजनेस – हिंदी, कम्युनिकेशन – हिंदी एवम् टेक्नोलॉजी तथा तुलनात्मक अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति आदि की जरुरत है। एक ऐसा चैनल स्थापित किया जाए जिसमें हिंदी और भारतीय भाषाओं की शिक्षा के लिए बच्चों के रोचक कार्यक्रम हो। यह कार्यक्रम टेलीविजन और स्मार्टफोन के माध्यम से पूरी दुनिया में मुफ्त प्रसारित किया जाए। सांस्कृतिक आदान–प्रदान में हिंदी को विशेष महत्व दिए जाने की भी जरुरत है। भारत में प्रवासी हिंदी साहित्य के अध्ययन को अनिवार्य किया जाना चाहिए और इसके शोध के लिए आर्थिक सहायता भी प्रदान की जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाए जाने पर भी जोर दिया जाय।

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.03, May : 2023

निष्कर्ष–

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, गुयना, त्रिनिडाड, और टोबैगो आदि विभिन्न प्रवासी देशों में भारतीय मूल के लोगों ने जो सघर्ष किया और बाद में मॉरिशस में या यूँ कहा जाय कि विदेशों में अपनी प्रतिभाओं के झंडे गाड़ें | साथ ही जैसा भी बन पड़ा, उन्होंने हिंदी की मशाल को वहां जलाए रखा है | चाहे भाषा के आधार
पर हो या बोलचाल के आधार पर या धर्म एवं संस्कृति के आधार पर ही क्यों न हो| इन सबमें अपनी हिंदी भाषा की अस्मिता को बनाये रखने में भारतवंशी मुख्य रूप से सफल हुए है।

संन्दर्भ ग्रंथ

1* - पवन कुमार 'अर्पित' ब्लॉग पोस्ट – अर्पित_की_बात

2* - 1-सनाढ्य, तोताराम की कथा, गिरमिटिया के अनुभव, संपादक– ब्रज विलाश लाल, आशुतोष कुमार, योगेन्द्र यादे, राजकमल प्रकाशन, न्यू दिल्ली, २०१२, पृष्ठ संख्या–9)

3* - मुनीन्द्र कुमार 'गुरु' - फेसबुक पोस्ट – हिंदी की अंतर्राष्ट्रीयता

4* -अभिमयु अनत, 'लाल–पसीना', पृष्ठ संख्या– १२५

5*- श्री जितेन्द्र कुमार मित्तल, 'मॉरिशस देश और निवासी', पृष्ठ संख्या– ६७

6*-मुनीश्वर लाल चिंतामणि, मेरी हिंदी, गगनांचल,वर्ष–40,अंक–1-2, जनवरी अप्रैल, २०१७ पृष्ठ संख्या–7

7* सीमा दास – ब्लॉगसपोस्ट – गिरमिटिया देशों में हिंदी साहित्य की दशा एवं दिशा और अभिमन्यु अनत का योगदान – सीमा दास

Copyright @ 2023 Author